THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180672

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82 | V31L Accession No. G.H. 1981

Author वर्मा, वृन्दावनलाल ।

Title लो भाई, पंचों लो !! 1947

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रकाशक—
सत्यदेव वर्मा बी. ए, एल एल बी
मयूर-प्रकाशन झाँसी।

प्रथमावृत्ति—१९४७

अनुवाद और चित्रपट निर्माण आदि के सर्वाधिकार लेखक के अधीन है।

मूल्य बारह आना

मुद्रक—
स्वाधीन प्रेस, झाँसी।

परिचय

चिरगांव के निकट भरतपुरा ग्राम में मेरे मित्र और सहपाठी श्री फूलचन्द पुरोहित रहते थे। लगभग पांच साल हो गए उनका देहान्त हो गया।

इस नाटक में वर्णित घटना का स्वरूप श्री फूलचन्द पुरोहित ने मुझको बतलाया था। घटना किस गांव और किस समय की है, यह उन को नहीं मालूम था। परन्तु उन्होंने इस घटना का एक पञ्चायत में प्रभाव शाली उपयोग किया।

चिरगांव से ४, ५ मील की दूरी पर घुसगवां नाम का एक गांव है। वहा किसी का बच्चा मर गया। एक गांव वाले पर आरोप लगाया गया कि उसने मन्त्र जन्त्र करवा कर बच्चे को मरवा डाला है। कहा गया कि मन्त्र जन्त्र चिरगांव के एक मुसलमान से करवाया था। यह व्यक्ति मेरे जङ्गल-भ्रमण में काफी दिनों साथ रहा है। मुझको आश्चर्य हुआ। क्या यह मन्त्र जन्त्र का भी ढोंग रचता है? और फिर मंत्र जंत्र से कोई किसी को मार दे!

परंतु पूरे गांव की चिल्लाहट यही थी। गांव भर कहता था—'चिर गांव का वह व्यक्ति बहुत बुरा आदमी है, उसने मंत्र जंत्र किया इसीलिए बच्चा मर गया।'

पञ्चायत हुई। पुरोहित जी को भी उसमें बुलाया गया। सिवाय उस अभियोग के और कोई बात ही न थी। कोई किसी की नहीं सुन रहा था। मन्त्र जन्त्र वाले को गांव की जनता और पञ्चायत दण्ड देने पर तुली हुई थी।

जब पुरोहित जी की किसी भी युक्ति को गांव की जनता ने न सुना तब उनको 'लो' भाई पञ्चो! लो!!' वाली लीला याद आगई, और उन्होंने उसका प्रयोग किया।

प्रयोग बिलकुल सफल रहा । घटना के सुनते ही गांव वाले हँस पड़े और उन्होंने अपराधी को निर्दोषी ठहरा दिया !

प्राचीन काल में पञ्चायत द्वारा बड़े बड़े झगड़े तै हो जाते थे, और सबसे बड़ी बात यह है कि, अन्याय और अत्याचार नहीं हो पाता था । पञ्च लोग विवेक से काम लेते थे । कभी कभी कठोर परीक्षाएं भी ली जाती थीं । परन्तु कम ।

सौ डेढ़ सौ वर्ष से गांववाले पञ्चायत के साधन को, अनभ्यास के कारण, भूलसा गए हैं । कानून द्वारा फिर पञ्चायतें स्थापित हो गई हैं । डर है कि गांव की दलबन्दियों के कारण पञ्चायतों का अभिप्राय न्याय और विवेक के मार्ग पर कम चले, या रेंग रेंगकर चले । कहीं कहीं तो पञ्चायत का रूप इतना बिगड़ गया है कि किसी भी व्यर्थ चख चख के लिए कुछ लोग कह उठते हैं, 'क्या पञ्चायत मचा रक्खी है !' परन्तु हिन्दुस्थान की प्रकृति में पञ्चायत के बीज वर्तमान हैं, इसलिए आशा है कि बिना किसी पुरातन अनाचार को संग लगाए वह अपने पुराने गौरव को फिर प्राप्त करेगी और हिन्दुस्थान की प्रतिभा को सजीव । यह लघु नाटक यदि इन पञ्चायतों को आनन्द, विवेक और साधारण जन के प्रति सहानुभूति देसका तो लेखनी का कार्य-क्रम बहुत नहीं अखरेगा ।

झांसी
२९-३-१९४७

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

छन्दी

धॉवू

सबल

गॉव के सरपच, पंच, मुखिया, चौकीदार इत्यादि

लो, भाई पंचो ! लो !!

पहला दृश्य

[बगरा गाँव के बाहर खेत, जिनमें पका फसल खड़ा हुई है। आधी रात का समय है। अँधियारी रात। तारे जगमगा रहे हैं। झींगुर झंकार रहे हैं। कभी कभी एकाध चिड़िया बोल जाती है। सब सुनसान है। कन्धे पर एक मटमैला कपड़ा डाले और हाथ में हसिया लिए छन्दी आता है। छन्दी लगभग चालीस वर्ष का तगड़ा आदमी है। किरमिच का फटा हुआ जूता पहने है। उसमें आवाज़ नहीं होती। सिर पर मैला टोपा लगाए हुए है। खेत की मेंड़ से जरा हटकर वह अपने कन्धे पर डाले कपड़े को फैला देता है और इधर उधर देखता हुआ बड़े कान चौकन्ने से फसल काटने में चिपट जाता है। अन्न की बालों को काट काटकर मेंड़ के पास फैले हुए कपड़े पर इकट्ठा करता जाता है। उसको किसी के आने की आहट मिलती है, चौकन्ना हो जाता है। और काटे हुए अनाज को जल्दी से बाँधकर खेत के एक सघन भाग में जा छिपता है। धीरे अपने

लड़के सबल के साथ आता है। बाप उतरती अवस्था का दुर्बल किसान है। बहुत कम कपड़े पहने है। जो भी हैं वे फटे हुए। सबल तेरह-चौदह वर्ष का दुर्बल, परन्तु कुशाग्रबुद्धि लड़का है। अद्धा कुर्ता और जांघिया पहने है। बाप-बेटे दोनों नंगे पैर हैं। हंसिया लिए हैं, गांठ बांधने के लिए एक एक मैला कपड़ा। दोनों मेड़ पर खड़े हो जाते हैं।]

सबल—(चारों ओर देखकर) बापू मुझको कांटा लग गया है। चला नहीं जाता। बहुत त्रास रहा है।

बांधू—तूने ऐन मौके पर कांटा लगा लिया! अभागे, मैंने दिनभर कुछ नहीं खाया, तुझे तो दो रोटियां मिल भी गई थीं। मेरी आतें जल रही हैं।

सबल—कहा था कि मजदूरी कर लेने दो, सो अपने पास दिन भर बिठलाए रहे।

बांधू—मेरा जी खराब था! तू चला जाता तो मुझे पानी कौन पिलाता? अब हलका है और बड़ी भूख लग रही है।

सबल—तो तुम्हीं काटने लगो, मेरा तो पैर फटा जा रहा है।

बांधू—हाथ तो नहीं फटा जा रहा है? कर जल्दी।

सबल—गिर पड़ा सो हाथ में चोट आ गई है!

बांधू—तो मैं अकेले कितना कर लूंगा? कमजोरी के मारे मेरा हाथ ही नहीं चल पा रहा है। कमर भी बहुत दुख रही है।

सबल—(बैठकर) मुझसे तो अब खड़ा ही नहीं हुआ जाता है। जो दिखलाई पड़े सो करो।

बांधू—घर में चारपाई के सिवा और कुछ नहीं है जिसको बेचकर पेट भर सकूं।

सबल—वह और रह गई है तुम्हारे जुआ खेलने के लिए, सो उसको भी बेचकर दांव लगा आओ।

धाँधू—क्यों रे सनीचर, यहां लड़ने को आया है या पेट भरने को ? कोई सुन लेगा तो लाठियों से भुस कर देगा। ओह !

सबल—भूखों मरने से तो बच जायंगे !

धाँधू—उठ, उठ ! बालें तोड़कर चबा ले। मैं भी जितनी बनेंगी चबा लूँगा। सिर पर बोझ न ले जायंगे कोई बात नहीं, कल फिर देखा जायगा।

सबल—दो-एक दिन में सब खेत कट जाएंगे, फिर ?

धाँधू—फिर मैं कुछ करूंगा और तू मजदूरी करना।

सबल—मजदूरी तो इतनी मिलती ही नहीं कि पेट भर सकें ! पञ्च और मुखिया अपना काम तो दिन भर करवाना चाहते हैं, पर खाने को पेट भर नहीं देते।

(वे दोनों बाले तोड़कर खाने लगते हैं)

सबल—बापू, मेरा हाथ काम नहीं कर रहा है।

धाँधू—अच्छा मैं तोड़कर देता हूँ, इधर आ।

सबल—फिर तुम अपना पेट कैसे भरोगे ?

धाँधू—अभी मेरे भीतर ज्वर है, इसलिए थोड़े में ही आधा गया। और नहीं खाया जाता।

(सबल लंगड़ाता-लंगड़ाता उठता है और गिर पड़ता है)

सबल—हाय राम !

धाँधू—क्या हुआ सबलुआ ?

सबल—गड्ढे में पैर पड़ जाने से गिर गया। उठा नहीं जाता। पसलियों में काटे चुभ गए हैं !

धाँधू—मैं आता हू, बेटा ! *(धाँधू उसके पास आता है)*

सबल—*(बैठकर)* घुटना फूट गया, बापू !

धाँधू—*(उसको उठाने के प्रयत्न मे असफल होकर)* मेरी कमर इतनी दुख रही है कि तुझको उठा ही नहीं पा रहा हूँ। हे राम ! *(घबराकर)* और मेरा हँसिया वहीं कहीं छूट गया है।

(हँसिया उठाने जाता है। ढूंढता है, परन्तु नहीं पाता। हड़बड़ा कर सबल के पास फिर आता है।)

सबल—हँसिया मिल गया बापू ?

धाँधू—*(रुआँसे स्वर में)* नहीं मिला। अब कैसे काम चलेगा ? दिन में ढूँढ़ने आ नहीं सकते। *(धीरे क्षुब्ध स्वर में)* न तुझको चोट लगती और न हँसिया खोता। अब क्या करूँ ! हाय, क्या करूँ ?

सबल—समझ लेना जुए में हार गए। हू !

धाँधू—क्यों रे ठठोली करता है ? एक ढेला उठाकर मारूँगा तो खोपड़ा फट जायगा।

(छुन्दी आता है)

सबल—कोई आ रहा है, बापू ! भागो। *(सबल भागने की चेष्टा करता है, परन्तु गिर गिर पड़ता है। धाँधू थोड़ा दूर भागकर घुटने टेक कर बैठ जाता है)*

धाँधू—मैं हाथ जोड़ता हूँ, पाँव पड़ता हू, दया करो ! आगे कभी ऐसा नहीं करेंगे। और हमने ऐसा कुछ किया भी नहीं है। अभी आए थे। अभी, अभी।

छुन्दी—*(पास आकर)* घबराओ मत, हम तुमको-मारने पीटने नहीं आए हैं; बचाने आए हैं।

धाँधू—*(पहचान कर)* कौन ? छुन्दी ? तुम कैसे आए यहाँ ?

लो, भाई पञ्चो ! लो !!

छन्दी—जैसे तुम आए।

धाँधू—हम तो वैसे ही आए थे।

छन्दी—फिर हँसिया काहे को लाए थे ?

धाँधू—तुम क्या कर रहे थे ?

छन्दी—जुआ खेल रहे थे। ह ! ह !! ह !!! जआ।

धाँधू—सवेरे की ठंडक में महुए बीन लेता हूँ, दुपहरी की गरमी मे नाले के किनारे करौंदी की छांह में लेट जाता हूँ जब बुखार तेज होता है, तब घर पर पड़ जाता हूं-जुआ कब खेलता हूँ ?

छन्दी—रात को।

सबल—रात को नहीं खेलते, करौंदी की छाँह में दिन मे खेलते है. दिन में चरवाहों के साथ।

धाँधू—चल घर पर देखता हूँ तुझको। झूठे ! निकम्मे !!

छन्दी—तो क्या हुआ ? मै जुआ न खेलकर कुछ और बड़े खेल खेलता हूं ! किसी की मजाल है कि कुछ कहले ? मुँह पर कुछ कहे तो सर चकनाचूर कर दूँ !

धाँधू—हाँ भाई तुम्हारे बदन में ताकत है। हम तो अधमरे हैं और लड़के में भी कुछ दम नहीं।

सबल—काँटे कसक रहे हैं, बापू। अरे राम, मरा।

धाँधू—घिसट घिसट कर चल यहां से। किसी तरह रात काट ले तो दिन में देखेंगे। पेट के लिए कुछ मिलता है या नहीं ! चल इनको करने दे अपना काम ? तेरे मारे जितना हैरान हूँ उतना बीमारी के मारे भी नहीं हूँ।

छन्दी—जिसमें गांव भर मे जाकर तुम हल्ला पीटो। पर तुम्हारा हँसिया तुमको पकड़वा देने के लिए काफी है। क्या कहते हो ?

सबल—और ऐसे में कोई आ जाय तो किसी भी सबूत की अटक नहीं। यहीं इतना गुल गपाड़ा कर रहे हो कि ठिकाना नहीं।

छन्दी—मैं तुम लोगों की मदद करना चाहता हूँ, भूखों न मरने दूँगा।

धाँधू—सो कैसे ? सो कैसे भैया छन्दीलाल ?

छन्दी—मैंने बहुत-सा अनाज काट लिया है मैं तुम्हारे घर पहुंचाए देता हूँ। ऐसे ! समझ गए ?

धांधू—सचमुच ? अच्छा होते ही मैं मेहनत मजदूरी करने लगूँगा। सबलुआ भी करेगा। फिर किसी का अन्न हरने की ज़रूरत नहीं रहेगी। कैसे ले चलोगे ?

छन्दी—सिर पर रख कर।

सबल—मुझसे तो चला ही नहीं जाता। क्या करूँ ?

छन्दी—तुमको कन्धे पर बिठला लूँगा।

धाँधू—भैया छन्दीलाल तुम युग-युग जियो।

छन्दी—(*हँसकर*) गाँव वाले चाहते हैं, मैं कल ही मर जाऊँ।

सबल—जल्दी करो कोई आ न जाय।

धाँधू—भैया छन्दीलाल मेरा हँसिया भी ढूँढ़ दो। मेरी गांठ में इतने पैसे नहीं कि दूसरा ले सकूँ। और पहचान लिया गया तो पञ्च लोग मार डालेंगे।

छन्दी—मार नहीं डालेंगे—जिन्दगी भर मजदूरी करायेंगे। और तुम उफ़ भी न कर सकोगे। इन पञ्चों की अकल ठीक करनी है। बहुत घमंडी हो गए हैं। अपने को इन्द्र समझने लगे हैं। कहीं का राजा।

धाँधू—पहले मेरा हँसिया ढूँढ़ दो, राजा भैया।

छन्दी—पहले अनाज लाऊँगा ।

(छन्दा जाता है और कटे हुए अनाज की गठरी उठा लाता है । उसके बाद हँसिया ढूंढ लाता है ।)

धाँधू—राम करे तुम हजार बरस जियो ।

छन्दी—(हँसकर) हजार बरस में तो मैं शहर के शहर उजाड़ दूँगा ।

(मक्खन को कन्धे पर बिठलाता है और अनाज की गठरी को सिर पर रखता है । एक हाथ में धांधू का हाथ पकड़ता है ।)

धाँधू—रास्ता मैं दिखलाता चलूँगा ।

छन्दी—बुड्ढे, एक बात की गांठ बांध लो । अगर तुमने या तुम्हारे लड़के ने कहीं भी हमारे काम की चर्चा की तो गँड़ासिए से काट डालूँगा। और नाले में कहीं गाड़ दूँगा । जानते हो मेरा नाम छन्दी है ।

धाँधू—नहीं भैया छन्दीलाल ! हमारे साथ इतना बड़ा उपकार किया, हम क्या ऐसे कृतघ्न हैं कि तुम्हारी बदी करते फिरें ? मैं आगे जुआ भी न खेलूँगा ! धरम ईमान बरतूँगा ।

छन्दी—(चलते चलते) तुम खूब जुआ खेलो और रात में खेत काटो, हमको फिकर नहीं, लेकिन मेरे साथ छल-कपट मत करना, नहीं तो तुम जानो ।

मक्खन—कभी नहीं करेंगे छन्दी काका ।

धाँधू—कभी नहीं ।

छन्दी—अच्छा, अब चुपचाप चलो ।

(सब जाते हैं)

दूसरा दृश्य

[मंगरा गांव के सरपंच का मकान । मकान के बाहर चबूतरा है । इधर उधर छोटे बड़े मकान हैं । एक कोने पर गांव का स्कूल है । मकान के सामने थोड़ा सा मैदान है । बाकी गांव में गलियाँ सकरी हैं । एक गली में से गाँव के दो आदमी आते हैं और सरपंच के दरवाजे पर चिल्लाते हैं । उनकी पुकार पर सरपंच किवाड़ खोलकर बाहर आता है । वह अधेड़ अवस्था का मनुष्य है । समय—सवेरा]

सरपंच—क्या बात है ?

एक—लुट गए ! हम तो लुट गए !!

दूसरा—हमारा तो सत्यानाश हो गया !!!

सरपंच—क्या हो गया ? शांति के साथ बतलाओ, बैठो ! (*सरपंच चबूतरे पर बैठ जाता है*)

दोनों—सारी फसल काट ली किसी ने रात को ! (*सिर पर हाथ रखकर दोनों बैठजाते हैं*)

सरपंच—किसने की होगी यह चोरी ?

पहला—रात को पहरा देने तो जाते नहीं । } *(एक साथ)*
दूसरा—न जाने कौन डम-डम होता है । }

सरपंच—बराबर शिकायत हो रही है । रखाते-रखाते चोरी पर चोरी हो रही है ! दिन भर के थके मांदे लोग रात भर जागे भी कैसे ? बाहर का तो है नहीं । कोई गांव का ही है । चौकीदार को बुलाता हूं—थाने में इत्तला भिजवाता हूँ ।

पहला—बहुत तो हो चुकी । } *(एक साथ)*
दूसरा—थाने वाले कुछ नहीं करते । }

सरपंच—कुछ सोध लगा ? कुछ भी ?

दोनों—कुछ नहीं।

पहला—मेरा तो आधा खेत कट गया।

दूसरा—और मेरा लगभग पूरा।

दोनों—चल कर देख न लो ?

सरपंच—देख तो लेंगे ही। पर देखने से तो क्या होता है। तुम थोड़े ही भोल रहे हो। ढोरों ने तो नहीं चर लिया कहीं ?

पहला—ढोरों का चरा क्या हम पहिचान नहीं सकते ?

दूसरा—ढोरों का चरा तो अलग ही दिखलाई पड़ता है।

सरपंच—वही होगा। उसी ने काटा होगा। वही धरती को सिर पर लिए फिरता है। वही बड़ा पाजी है। तमाशा देखने शहर जाता है। गुण्डा बना फिरता है। सब को आँखें दिखलाता है। उसकी फसल को कोई नहीं चुराता।

पहला—फसल तो पञ्चों की भी कोई नहीं काटता। हम गरीब ही मारे जारहे हैं।

सरपंच—हम रखवाली भी तो काफी करते हैं। खेतों पर आदमी दिन रात बने रहते हैं।

पहला—हम इतने आदमी कहाँ से लाएँ ?
दूसरा—गाँव छोड़ कर चले जायँ क्या ? } (एक साथ)

सरपंच—अबकी बार ऐसी पञ्चायत करेंगे कि उसको पुरखों की याद आ जावेगी।

पहला—कई बार तो हो चुकी पञ्चायत। कोई न कोई पञ्च ऐसे लचक जाते हैं उसके पक्ष में, कि न्याय होने ही नहीं पाता।

दूसरा—अबकी बार की पञ्चायत ही ठीक नहीं बनी।

सरपंच—तो पञ्च यों ही किसी को मार दें ? गवाही साखी भी तो कोई हो।

पहला—गवाही-साखी के सामने कोई चोरी करता है ? क्या होगया है तुमको ?

दूसरा—गाँव में अन्धेर मच रहा है। हम पूछते हैं कि पञ्चों की चोरी क्यो नहीं होती ? तुम कहते हो हम दिन-रात रखवाली करते हैं। हम पूछते हैं मुखिया और चौकीदार की चोरी क्यों नहीं होती ? वे तो दिन-रात रखवाली नहीं करते ?

सरपंच—तो क्या पञ्च लोग चोरी करवाते हैं ?

दोनों—क्या जानें।

सरपंच—क्या जानें !

पहला—हाँ, पञ्चायत काहे की जो चोर-गुण्डों को पकड़ कर दण्ड न दे सके ? कह दो कि हमसे कुछ नहीं हो सकता—हम अदालत कर लेंगे।

सरपंच—अदालत में सबूत नहीं देना पड़ेगा ?

दूसरा—अदालत में झूठा-सच्चा सबूत दे देंगे। पञ्चायत में तो झूठी गङ्गा उठाने कोई आएगा नहीं ? अदालत में अपना मन तो भर लेंगे।

सरपंच—अबकी बार पुराना तरीका काम में लाएंगे। घबराओ मत। न्याय होगा। दण्ड दिया जाएगा। सनीमा-सनीमा सब भूल जाएगा वह।

पहला—सनीमा ने ही तो नाश मारा, जिन जिन गाँवों के मनुष्य सनीमा देखने जाते हैं सब बिगड़ जाते हैं .....।

दूसरा—और इस स्कूल ने क्या कम चौपट किया है ? इसी में पढ़ पढ़कर वह और उसके चेले-चांटे अच्छे-तब्बे करना और हुड़ुक-तुड़ुक करके बोलना सीख गए हैं।

सरपंच—कह तो दिया, अबकी बार उसकी अकल ठिकाने लगा दी जाएगी।

पहला—पर जब और पञ्च पक्के हों तब न !

दूसरा—हमसे पूछो हम बतलाते हैं, भेद की बात।

सरपंच—क्या ?

दूसरा—तुम्हारे कुछ पञ्च लालची हैं। रिश्वतखोर। कभी इन्साफ नहीं होने देंगे।

सरपंच—कौन ? कौन ?

दूसरा—कौन-कौन ! मौसी कहकर कौन काजल लगवाए ?

पहला—कोई घर में बकरी बंधवा लेता है। कोई मुफ्त में मजदूरी करवाता है। तो कोई ईंधन के लिए लकड़ी मंगवाता है और अनाज नहीं खर्च करना पड़ता है पावभर भी।

दूसरा—और, कोई अपनी उगाही करवाता है। कोई खेत रखवाता है। कोई घी-दूध मुफ्त लेता है।

सरपंच—तो अबकी बार दूसरे पञ्च चुन लेना।

पहला—गाँव में एका जो नहीं है।
दूसरा—अपने अपने गुट्ट बना रक्खे हैं। } (एक साथ)

सरपंच—पञ्चों को नाहक बदनाम करते हो।

पहला—चलो जी चलो, हम तो जानते थे।

दूसरा—किसी दूसरे गाँव का आसरा लेंगे। बची-खुची खेती में हम लगाए देते हैं आग। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।

सरपंच—यों ही बिगड़े चले जारहे हो ! कह दिया कि न्याय होगा, होगा और फिर होगा। हम गांव भर को अभी इकट्ठा करते हैं। उस भूत

छुन्दिया की सबको शिकायत है। तुम्हारे मामले में कोई पञ्च अधर्म नहीं कर सकेगा।

पहला—मास्टर को मत बोलने देना पञ्चायत में, वह उसके साथ ताश खेलता है। उसकी सेंट में है।

दूसरा—पटवारी को भी मत बोलने देना, छुन्दिया उसके साथ चौसर खेलता है। साथ-साथ दोनों सनीमा देखने जाया करते हैं।

सरपंच—चौकीदार को बुला लाओ।

पहला— आता ही होगा।
दूसरा—हम उसको बुला आए हैं। } (एक साथ)

सरपंच—अच्छा ! यह बन्दोबस्त करके घर से चले थे !!

पहला—तो क्या करते ? नाकों दम तो आगया है।

दूसरा—छुन्दिया को मालूम होगया है कि हम दोहधूप कर रहे हैं। गली में मिलते ही उसने आंखें दिखलाईं, मानो खा जाएगा !

सरपंच—अबकी बार उसको गाँव खा जाएगा। गांव भर के खिलाफ कोई भी सदा टेढ़ा नहीं चल सकता। जो चलता है वह अपने मुँह की खाता है। और उसके दांत टूट जाते हैं।

(चौकीदार आता है)

चौकीदार—राम राम। आज रात को फिर कई खेतों का अनाज कट गया है। कटा तो थोड़ा ही है, पर रौरा बहुत मचा हुआ है गांव में।

पहला - थोड़ा कटा है !

दूसरा—क्यों झूठ बोलते हो चौकीदार ?

चौकीदार—मैं देख आया हूँ। पञ्च लोग भी देख लेंगे। कटा जरूर है। चोरी होने में कोई सन्देह नहीं, पर सच्ची बातें यही है कि कटा थोड़ा थोड़ा ही है।

पहला—यह तो देखो कि चोरी कितने दिन से हो रही है, और कितने लोगों की हो रही है।

चौकीदार—इसमें कोई शक नहीं।

सरपंच—(*तेज होकर*) अबकी बार कानून को एक तरफ रखकर ऐसा कड़ा, ऐसा कड़ा इन्साफ़ किया जाएगा कि अपराधी के पुरखे कांप उठेंगे। फिर चाहे पञ्चों पर कोई आफ़त ही क्यों न आ जावे। गांव की किलप-कराह अब नहीं सही जाती।

चौकीदार—हुकुम हो।

सरपंच—अथाई पर सब गांव को इकट्ठा करो। मैं अभी आता हूँ।

चौकीदार—अभी लो। (*चौकीदार जाता है*)

सरपंच—तुम भी गांव के लोगों, पञ्चों और मुखिया को बुला लो। अकेला चौकीदार फिरेगा तो देर लग जायगी।

दोनों—अच्छा अभी बुलाते हैं। (*वे दोनों भी जाते हैं*)

(*दूसरी ओर से छन्दी आता है। सरपंच सहम जाता है।*)

सरपंच—तुम क्या यहीं कहीं खड़े थे ?

छन्दी—नहीं तो। मैं चोरी से किसी की बात नहीं सुनता।

सरपंच—(*आराम की सांस लेकर*) कैसे आए ?

छन्दी—तुमने सुना होगा दादा, खेतों में बहुत चोरियां हो रही हैं। गई रात ही कइयों के खेत कट गए !

सरपंच—सुना तो है। आज गांव भर की पञ्चायत होगी। अपराध का निखार होना, यदि इस बार भी अपराधी को छोड़ दिया गया, तो कुछ दिनों बाद ही यह पूरा, समूचा गाँव उजड़ जायगा।

छन्दी—मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ यह काम बाहर वाले का नहीं हो सकता। कन्जड़ों हाबूड़ों को सरकार ने दाब दूब दिया है।

सरपंच—पञ्चायत में अभी सब बात ऊपर आई जाती है। जो बदमाश इस काम को कर रहे हैं, वे अवश्य पकड़े जायेंगे। बच नहीं सकते। उनका काला मुँह किया जायगा।

छन्दी—कैसे पकड़े जायँगे वे बदमाश ?

सरपंच—गांव भर के सामने जो पञ्चायत होगी, उसी में बतला दूंगा।

छन्दी—और जो किसी बाहर वाले ने किया हो तो ?

सरपंच—तुमने अभी कहा कि किसी गांव वाले ही का हाथ इन चोरियों में है।

छन्दी—अरे ! मेरी जबान को मत पकड़ो दादा, मैं तुम्हारी मदद करने आया हूं।

सरपंच—क्या मदद करने आए हो, जल्दी कहो मुझको देर हो रही है। अथाई पर गांव के लोग इकट्ठे हो रहे होंगे।

छन्दी—तुमको ज़रा बैठकर सुनना होगा, बात कुछ लम्बी है।

सरपंच—क्या मुश्किल है ! अच्छा बैठो, सुनाओ।

(दोनों चबूतरे पर बैठ जाते हैं)

छन्दी—तुम जितनी फिकर चोरों के पकड़ने की करते हो उससे आधी भी गरीबों की सहायता की भी करते हो या नहीं ?

सरपंच—क्यों नहीं अमावस पूनो ब्राह्मण को सीधा देता हू, तिथि त्योहार को न्योते करता हूं, जिसमें कितने ही ग़रीबों को भी मिल जाता है।

छन्दी—जूठन मिलता है न उनको ? और यदि कोई ऐसा गरीब हो जो जूठन खाने से घिन करे और तुम्हारे द्वारे पर भीख मांगने से इनकार, तो उसके लिए क्या करते हो दादा !

सरपंच—जो हाथ-पैर न हिलावे, घरपर पड़ा पड़ा भूखो मरना चाहे, उसके लिए मैं क्या, कोई भी क्या कर सकता है ? ऐसा कौन है यहां।

छन्दी—मैंने एक बात कही दादा। ऐसे गरीब की किसी न किसी तरह मदद करनी चाहिए या नहीं ? या उसको मौत के मुँह में चले जाने देना चाहिए ?

सरपंच—कौन रोकता है, मदद करने से ? ऐसों की मदद भगवान करते हैं।

छन्दी—भगवान कौन उसके यहां अनाज की बोरी रख आये गे ?

सरपंच—तो, ऐसा आदमी मिहनत मजदूरी क्यो नहीं करता ?

छन्दी—मिहनत मजदूरी करने लायक ही न हो तो ?

सरपंच—न हो तो मैं करूं उसके बदले में मज़दूरी ? जल्दी कहो और क्या कहना है ?

छन्दी—मिहनत मजदूरी पूरी न मिले तो ऐसा गरीब क्या करे ? आप लोग ऐसे आदमियों से किसी न किसी दबाव में मज़दूरी करवाते हैं और उनको भर पेट खाना देते नहीं, कैसे काम चले उनका ? गांव में हो रहा है या नहीं ऐसा ?

सरपंच—बेगार तो किसी से भी नहीं ली जाती। सेत-मेंत तो कोई किसी का काम करता नहीं।

छन्दी—किसी पर एहसान का दबाव है। किसी पर बड़े आदमियो की मुलाकात का, किसी पर ज्योतिष का, किसी पर मन्त्र जन्त्र का, किसी पर एक दूसरे से लड़ाने भिड़ाने का, किसी पर कोई असम्भव अदृष्ट लाभ पहुंचाने का, किसी पर कोई, किसी पर कोई।

सरपंच—मदरसे से और मदरसे की पोथियों से जितनी शैतानी और बुराई तुमने सीखी उतनी किसी ने भी नहीं। मुझसे क्या यही सब कहने आए थे ?

छन्दी—मतलब की बात तो मैंने दादा तुम से अभी कही ही नहीं। लोगबाग जो कुछ तुम्हारे बारे में कहते हैं वह मैंने सुनाया।

सरपंच—कौन लोगबाग ?

छन्दी—काफी बड़ा गांव है, किस किस का नाम बतलाऊँ ? मै तुम्हारी निन्दा नहीं सुन सकता, इसलिए कहने आया, शायद पञ्चायत ही में कोई बोल उठे। लोगों का मुंह तो पकड़ा नहीं जा सकता।

सरपंच—पञ्चायत मेरे किसी मामले की होगी या इन चोरियों की ? लोग कह उठेंगे तो मैं ऐसे कहने वालों से डरता थोड़े ही हूँ।

छन्दी—पञ्चो को किसी से डरना भी क्यों चाहिए ? उनका कोई कर ही क्या सकता है ? अदालत में मामला जा नहीं सकता, चाहे जो कुछ करें।

सरपंच—(*कुढ़कर*) तुम तो व्याख्यान देने आए हो। मेरा समय खराब न करो, जाओ। मुझे जल्दी है।

छन्दी—जल्दी तो मुझको भी है। मुझको भी पञ्चायत में आना है।

सरपंच—तुमको तो आना ही पड़ेगा।

छन्दी—जरूर। इसलिए कि मैं लगी लिपटी नहीं रखता—खरी और साफ साफ कहता हूँ।

सरपंच—हां, हां, बड़े खरे हो, जानता हूँ ! गांव भर जानता है !! गांव का इतना खराब हाल हो गया है कि कुछ ठिकाना नहीं।

छन्दी—बेशक कुछ पञ्च भी जुआ खेलते हैं।

सरपंच—(*चौंककर*) तुमको कैसे मालूम ? (*निर्गांवत होकर, उत्सुकता के साथ*) कौन खेलते हैं ? झूठ मत कहना। धरम ईमान की कहना।

छन्दी—और कुछ चोरी भी करते हैं।

सरपंच—चोरी ! चोरी कौन करता है चोरी ?

छन्दी—जिसको चोरी कहते हैं वह जानी-मानी हुई चोरी नहीं। ब्याह में चुपचाप दहेज़ का लेना, चुपचाप लड़के का नीलाम करना, गरीब भूखों मरें, दावतों-पंगतों में अन्न और घी का बेहिसाब नाश करना, बच्चों के अखाड़े को आध पाव दूध और दो पैसे भी न देना और तीर्थ यात्रा करने तथा पुरखों के और अपने स्मारक बनवाने में हज़ारों रुपए फूँक देना !!

सरपंच—चोरों के मुँह से समाज सुधार की बातें !

छन्दी—मैं चोर हूं या नहीं हूँ, यह तो प्रमाण और निखार पर निर्भर है। पर मैं जो कुछ कह रहा हूं, क्या वह ग़लत है ?

सरपंच—बिल्कुल ! अब जाओ, मेरा माथा न खाओ।

छन्दी—मतलब की बात तो रह ही गई है अभी।

सरपंच—मतलब अतलब की बात को तुम्हारे पास कोई नहीं। केवल ऊल जलूल बकवास है। जो कुछ कहना हो पञ्चायत में कहना। इन चोरियों के बारे में गाँव भर का शक तुम्हारे ऊपर है। तुमको पूरी और पक्की सफ़ाई देनी होगी।

छन्दी—पहले सबूत तो हो तब सफ़ाई दे लूँगा। मैं इसी सम्बन्ध की बात करने आया था।

सरपञ्च—तुमको बात वात कुछ नहीं कहनी है। मैं और अधिक बकवास सुनना नहीं चाहता, जाओ।

छन्दी—चोरी का पता लग गया।

सरपंच—(*छिपी हुई उत्सुकता और प्रकट अवहेलनाके साथ*) कौन है ? देखो धोका मत देना, सच-सच कहना।

छन्दी—बिल्कुल सच कहूंगा। जो कुछ कहूँगा बिलकुल सच कहूंगा। राम मेरी मदद करें !

सरपंच—(*हँसकर*) झूँठ बोलने के पहले अदालत में गवाह जो सौगन्ध खाता है, यह तो बिल्कुल वही है। अब सच क्या बोलोगे ?

छन्दी—सो बात नहीं है। फसल कञ्जड़ों ने काटी है।

सरपंच—कञ्जड़ों ने ! तुम स्वयं थोड़ी देर पहले कह रहे थे कि कञ्जड़ों हाबूड़ों को सरकारने दाब-दूब लिया है। अब यह क्या कह रहे हो?

छन्दी—मैंने यह तो नहीं कहा कि कञ्जड़ों को सरकार ने मिटा दिया है। कञ्जड़ों का एक झुण्ड यहां से बारह मील के फासले पर बिलमा हुआ है। पुलिस उनकी निगरानी पर जरूर है। परन्तु वे लोग तो आंख बचाई और खिसके। बारह मील का धावा करके फिर जहां के तहां। ऐसे बज्र चोर कि हद है !

सरपञ्च—यह सब तुम्हारे मन की गढ़न्त है; वहीं पञ्चायत में कहना, अब और कुछ नहीं सुनना चाहता। मेरा तो सिर दर्द करने लगा है। हे राम !

छन्दी—मेरे पास पक्का सबूत है कञ्जड़ों की चोरी का। एक आया हुआ है। कमबख्त मेरे ही पास आया ! वह तुमसे मिलना चाहता है। दादा, इस चोरी के ब्योरे को क्या वह अनेक चोरियों की कथा बांचेगा।

सरपञ्च—(*रुचि के साथ*) कहां है वह ?

छन्दी—उसने मुझे बहुत-बहुत सौगन्ध देकर तुम्हारे पास सन्देसा भेजा है। यदि मेरी गल्ती या बेपरवाही से उसको कुछ हो गया तो सबके सब कञ्जड़ मेरी खड़ी फ़सल को खाक में मिला देंगे, और भी कोई बड़ी आफ़त सिर पर आ जाय !

सरपञ्च—(*अधिक रुचि के साथ*) कहो न मुझसे। मर्म को कोई न पा सकेगा।

छन्दी—तो गङ्गा जी की सौगन्ध खाइए। डर के मारे मेरा कलेजा सिटपिटा रहा है।

सरपञ्च—गङ्गा जी की सौगन्ध खाता हूँ, तुम्हारा नाम झंझट में न आने पावेगा।

छन्दी—तो बतलाता हूँ। ये सब चोरियां कञ्जड़ों की की और कराई हुई हैं। चूंकि मैं यों ही बदनाम हूँ, इसलिए यह कञ्जड़ मेरे पास ही आया। उसने कहा है कि उसके गिरोह के दो कञ्जड़ उत्पात कर रहे हैं। वह नाम बतलावेगा, उनको पकड़वा दिया जाय। आपकी मिहनत, दौड़-धूप के बदले में दो दुधार भैंसें दे रहा है। भैंसें चोरी की नहीं हैं।

सरपञ्च—(*सोचते हुए*) भैंसें क्यों दे रहा है ?

छन्दी—जिसमें आप मन लगाकर काम करें। शायद यह कञ्जड़ भी खुद चोरियों में था। किसी चोरी में शामिल रहा हो। कञ्जड़ों में परस्पर शत्रुता और दलबन्दी हो गई है। इसीलिए वह अपने को बचाकर अपने दुश्मनों को पकड़वाना चाहता है।

सरपञ्च—भैंसें कहां हैं ?

छन्दी—कंजड़ों के पड़ाव में होंगी।

सरपञ्च—और वह कंजड़ कहां है ?

छन्दी—मेरे घर पर।

सरपञ्च—किसी और ने देखा है उसको ?

छन्दी—कई लोगों ने देखा है। दिन निकले मेरे घर आया था।

सरपञ्च—चोर होता तो ऐसे खुले खज़ाने आता वह तुम्हारे घर ?

छन्दी—शायद वह चोर नहीं है। मैंने अटकल ही तो लगाया था कि शायद हो।

सरपञ्च—तुम्हारे ही पास क्यों आया वह ?

छन्दी— कहा न कि मैं बहुत बदनाम हूँ।

सरपञ्च —(हँसकर) यानी चोर के पास चोर आया !

छन्दी—तुम्हारे पास भी आयगा दादा। वह भैंसें देने आयगा तुम तो भले हो ? हां।

सरपञ्च—कब तक ले आयेगा ?

छन्दी—जब के लिए तुम तय करदो।

सरपञ्च —तुमने पूछा था कि कैसी हैं भैंसें ? उनकी क्या उमर है ? उनके तले क्या है ? पड़ियां या पड़वे ?

छन्दी—दोनों के नीचे पड़वे हैं, भैंसें नई हैं और बहुत दुधार हैं।

सरपञ्च—अवश्य चोरी की होंगी।

छन्दी —नहीं हैं। कंजड़ों के पास क्या निज का कुछ नहीं होता ? यदि ऐसा होता तो पुलिस उस माल को कभी उनके पास न टिकने देती। मुझको तुम जैसा उत्तर दो वैसा ही कंजड़ को भुगता दूं। मुझे भी देर हो रही है। कहो तो कंजड़ को तुम्हारे पास अभी भेज दूँ ?

सरपञ्च —नहीं नहीं, इस समय मत भेजो।

छन्दी—तो कब भेजूं ? वह जल्दी में है, कहीं भाग न जाय। उसको भी तो डर लगा हुआ है।

सरपञ्च—आज की पञ्चायत निबट लें, तो उससे बातें करूंगा।

छन्दी—फिर क्या रह जायगा ? उन चोरियों के लिए ही तो पञ्चायत हो रही है, जिनमें कंजड़ों का हाथ रहा है। उसी सचाई को पञ्चायत में साबित करना है।

सरपञ्च—पर लोगों का सन्देह तो तुम्हारे ऊपर है।

छन्दी— उसी के निवारण के लिए तो दादा तुम्हारे पास आया हूँ। सांच को आंच क्या ?

सरपञ्च—वे लोग तो कहेंगे कि 'हाथ कंगन को आरसी क्या?'

छन्दी—मैं मिडिल की परीक्षा से नहीं घबराया, हालाकि मैं फेल हो गया, तो यह है क्या ? पर कंजड़ तो सब के सामने आयगा नहीं और न इकबाल करेगा, और, फिर दो भैंसें यों ही तुम्हारी मुट्ठी में से निकली जाती हैं। क्या कहते हो दादा ?

सरपञ्च—(*जाते जाते*) यह कि तुम्हारी बात की प्रतीति नहीं होती। जाओ, अब और बात नहीं करूंगा। तुम काफी पाजी हो।

(सरपंच किवाड़ बन्द कर लेता है। छन्दी नाक टटोलता हुआ जाता है।)

तीसरा दृश्य

[बंगरा गाँव की अथाई। एक बड़े पेड़ की छाया में चबूतरे के ऊपर कुछ लोग बैठे हैं। इनमें पंच और मुखिया भी हैं। चबूतरे के इधर उधर गांव के अन्य लोग हैं। इनमें धाँधू और सबल भी हैं। चबूतरे के एक कोने पर छन्दी आ बैठता है। वह आनन्द मग्न है। चबूतरे के आस पास खपरों के टुकड़े पड़े हुए हैं। कूड़ा कचड़ा भी। समय--दिन।]

मुखिया कहो छन्दी, आज तो बड़ी मौज में दिखलाई पड़ रहे हो। शाबाश रे छन्दी, शाबाश !

छन्दी—मुझको कभी किसी ने रोते देखा है ?

पञ्च—सरपंच आ जायँ तो आटा दाल का भाव मालूम पड़ेगा। उठ बैठ चबूतरे पर से। यह पंचों की अथाई है। न्याय करने की जगह है।

छन्दी—(*खड़ा होकर बिना अनमना हुए*) क्यों ? चबूतरे पर बैठे रहने से क्या होगा ? मेरे क्या ज़मीन नहीं है ? घर द्वार नहीं है ? ढोर डंगर और खेती नहीं है ?

पञ्च सब कुछ सही। पर तुम्हारे ऊपर चोरियों का आरोप है, इसलिए नीचे बैठो।

छन्दी –सरपञ्च से आपकी बातचीत हुई या नहीं, या यों ही लगे बातें मारने ? उनको चोरियों का कुछ कुछ हाल मालूम है।

मुखिया—हो आई है चर्चा और मालूम होगया है कि तुम किस के लिए क्या कह रहे हो।

छन्दी—मैंने सरपञ्च से झूठ थोड़े ही कहा है। पर वाह रे पञ्च, सौगन्ध खाने पर भी बात पेट में न पचाई ! ऐसी जल्दी सब उगल दिया !!

पञ्च—चुप बेहया ! तू पञ्चों को चोर बनाता है !! *(क्रोध के मारे थरथराने लगता है)* हम लोगों के ईमान पर भी कीचड़ फेंकता है !!!

छन्दी—अच्छा ! यह बात !! तो सरपञ्च ने चुगली खाई है। भैंसों वाली बात नहीं बताई !

मुखिया—कौनसी भैंसों वाली ?

छन्दी—कंजड़ों की भैंसों वाली। पर मैं क्यों किसी की बात कहकर ओछा बनूँ ?

मुखिया – तुम इतने लम्बरी हो कि कोई वकील–मुख्तार भी इतना न होगा।

पञ्च—कहो भाई गांव वालो, कैसा है यह छन्दी ?

कुछ गाँव वाले—उचक्का है।
कुछ और गाँव वाले—उठाईगीरा है।
कुछ और गाँव वाले—बहुत ठीक है।
} *(एक साथ)*

धाँधू—बिना गवाही–साखी के किसी को बुरा नहीं कहना चाहिए।

सबल—छन्दी काका ने ऐसा क्या किया है ?

पञ्च—चुप बे, काका के बच्चे ।

(सरपंच कागज़, क़लम और दावात लिए आता है)

मुखिया—आओ दादा । (एक साथ)
पञ्च—आओ सरपञ्च । (एक साथ)
चबूतरे पर बैठे हुए कुछ लोग—जगह दो, जगह दो । (एक साथ)
कुछ और पञ्च—आओ, आओ । (एक साथ)

सरपञ्च—*(ठोड़ी को उँगलियों में मरोड़ते हुए)* छन्दीलाल, तुम्हारे ऊपर गई रात की चोरियों का आरोप है । गाव वालों का शक है कि तमाम चोरियां तुम्हीं करते और करवाते हो । *(पञ्चों से)* गांव वाले कहते हैं न ? मैंने गांव वालो की बात ठीक ठीक बतला दी है न ? मैं अपनी तरफ़ से बनाकर नहीं कह रहा हूं छन्दीलाल ।

एक पञ्च—बिल्कुल ठीक बतलाई है ।

दूसरा पञ्च—हम कहते हैं कि इसके बराबर तो दूसरा बदमाश है ही नहीं ।

तीसरा पञ्च—संसार भर में ढूँढ़ने पर भी मिलेगा नहीं !

छन्दी—और हमारा गांव तो काशी जी से भी न्यारा है । मुझको छोड़कर इसमें सब हरिश्चन्द्र ही हरिश्चन्द्र बसते हैं ।

एक पञ्च—आज इसकी अकल ठिकाने लगानी है । (एक साथ)
दूसरा पञ्च—खाल उधेड़ने लायक है । (एक साथ)
तीसरा पञ्च—कंजड़ो से भी गया-बीता । (एक साथ)

मुखिया—बोलो छन्दी, क्या कहते हो ? चोरियां कीं कि नहीं कीं ?

छन्दी—मुझको चोरियों से क्या प्रयोजन ?

एक पञ्च—सवाल करते हो ? जवाब दो ।

छन्दी—जवाब ही तो दिया है । मैं चोरियां क्यों करने लगा ?

दूसरा—तो ये सब चोरियां किसने की ?

छन्दी—पञ्च जानें। मैं क्या जानूँ ?

पञ्च—पञ्च जानें ! पञ्च क्या तुम्हारे पेट के अन्दर बैठे हैं ?

छन्दी—पञ्च लोग सब जानते हैं।

धाँधू—पांसा पड़े सो दांव। पञ्च करें सो न्याव।

कुछ गाँव वाले—पञ्च न्याय ही करेंगे, न्याय !

छन्दी—क्यों नहीं। क्यों नहीं। पञ्च कहें बिल्ली तो बिल्ली !

मुखिया—छन्दी, तुमको मुँह सँभाल कर बात करनी चाहिए। अखबार पढ़ने से क्या तुम्हारी अकल बिल्कुल मारी गई ?

छन्दी—अखबार पढ़ने से और होता ही क्या है ? पञ्च लोग अखबार नहीं पढ़ते तो देखिए उनकी अकल कितनी सच्ची है। सनीमा देखने से मैं चोरी करने लगा और अखबार पढ़ने से अकल मारी गई !

मुखिया—किसी से तो डरो छन्दी।

छन्दी—अकल होती तो सबसे डरता। बिना अकल वाले तो मौत से भी नहीं डरते।

सरपञ्च—देखो छन्दी, गांव भर तुम्हारे खिलाफ़ है। तुम्हारी करतूतों से सबके दिल तुम से फिर गए हैं। बहुत ऐंठ करने का फल यह होगा कि न घर के रहोगे और न घाट के।

छन्दी—हाय रे, क्या करूं इस जीभ को (*मुंह पकड़ते हुए*) अब मैं चुप हूँ। बिल्कुल चुप।

धाँधू—पञ्चायत का चबूतरा धर्मराज का आसन है। बड़े बड़े झगड़े निबट जाते हैं यहां। यह भी निबट जायगा।

छन्दी—यह नहीं मानती, नहीं मानती जीभ मेरी। (*मुँह खोलकर*) देवताओं में भी झगड़े हुए हैं। अगर उन्होंने आपस में पञ्चायत करली

होती तो इस संसार में किसी को भी कानोकान खबर न पड़ती और न बड़ी बड़ी पोथियां रची जातीं; और क्या कहूँ ?

एक पञ्च—मूसल कहीं का ? निर्लज्ज !!

छन्दी—अब कुछ नहीं कहूँगा।

सरपञ्च—तो तुम यह कहते हो कि तुमने चोरियां नहीं की ?

छन्दी—हूँ

सरपञ्च—साफ कहो जी हमको लिखना पड़ेगा।

छन्दी—कुछ कहूँगा तो पंच लोगों का पारा गरम हो जायगा। कहेंगे मूसल हूँ। निर्लज्ज !

सरपञ्च—जो कुछ पूछा जाय उससे अधिक कुछ मत कहो।

छन्दी—पूछो।

सरपंच—की कि नहीं की ?

छन्दी—की कि नहीं की ?—नहीं की, कह तो दिया था।

(सरपंच लिख लेता है)

सरपञ्च—गांव वालो, कहो किसको क्या कहना है।

एक—छन्दी चोर है। बज्र चोर है। इसने मुझको मारा और धमकाया था।

दूसरा—मेरी खेती इसी ने उजाड़ी।

तीसरा—मेरा घास चुराया था।

चौथा—अखाड़े में लड़कों को बुला-बुलाकर उनसे अनाज और पैसे चुरवाता है। मेरे लड़के के इसने कान उखाड़े थे।

पांचवां—इसके घर में जुआ होता है।

छठवाँ—यह गांव भर में अकड़कर चलता है। किसी से भी अच्छी तरह नहीं बोलता।

कुछ गाँव वाले—चोरी करता है।
कुछ और गाँव वाले—सरकारी सांड़की तरह डोलता है
कुछ और गांव वाले—गुण्डा है।
कुछ और गाँव वाले—इसका काला मुँह करो।
(एक साथ)

धांधू—भाई पञ्चो मैं ग़रीब हूं, पर मेरी भी कुछ सुनी जानी चाहिए। चाहे जिसके लिए, चाहे जो कुछ कह देने से ही साबित नहीं मान लिया जाता। गवाही-साखी होनी ही चाहिए।

सबल—वे बहुत भले हैं।

एक पञ्च—चुप !

छन्दी—मैं चुप नहीं रह सकता, एक सवाल अवश्य करूँगा। क्या उन कागज़ों में मेरा फैसला लिख लिया गया है ? या अभी कुछ निर्णय होगा ?

सरपञ्च—अभी कोई फैसला नहीं हुआ।

छन्दी—यहां आने से पहिले क्या ये पंच आपके घर गए थे ?

सरपञ्च—तो क्या हो गया ?

छन्दी—हो कैसे नहीं गया ? सब मलाह-सूत बांधकर आए हैं। भरे हुए आए हैं।

मुखिया—नहीं नहीं, निखार किया जाएगा।

छन्दी—पंचों से तुम्हारी क्या बातचीत हुई दादा ?

एक पञ्च—तुम कौन होते हो पूछने वाले ?

छन्दी—छन्दीलाल ! छन्दीलाल !!

दूसरा पञ्च—ऐसा गँवार और ऐसा मुँहजोर है कि अदब-क़ायदा तो इसके पास छूकर नहीं निकला।

छन्दी—तुम्हारी जेब में है अदब-क़ायदा झपाझप ! किसी की बकरी बांध ली, किसी की गाय !! किसी से रुपया ले लिया !!! किसी की ज़मीन में घुस बैठे !!!! मज़दूरों से फोकट में मजदूरी करा ली !!!!! बन गए पञ्च, हो गए धर्मपुत्र जुधष्ठर !!!!!!

एक पञ्च—रोको मुखिया इसको।
दूसरा पञ्च—जबान खींच लेंगे इसकी।
तीसरा पञ्च—पीठ फोड़ दी जाएगी।
} (एक साथ)

कुछ लोगों का समूह—(*जो अब तक चुप था और ज़रा बाद में आकर खड़ा होगया था*)—हां, ऐसे ही मार लोगे गुरू को !

सरपञ्च—सब लोग चुप रहो। बलवा करने आए हो क्या ? अगर ज़रा भी गड़बड़ की तो इसी पल चौकीदार को थाने भेज दूंगा।

छन्दी—ठहरो भाइयो ! ठहरो, पहले देख तो लो न्याय किस तरह किया जाता है।

सरपञ्च—चौकीदार, तुम्हारा कथन पहले सुना जायगा। बोलो क्या जानते हो ?

चौकीदार—मैंने फसल काटते या चोरी करते तो किसी को भी नहीं देखा; झूठ नहीं बोलूँगा मैं। परन्तु एक दिन चोरी की इत्तिला करने थाने की तरफ जा रहा था, तब छन्दीलाल आ गए और उन्होंने मुझे थाने की तरफ जाने से रोक दिया। बोले—कि इत्तला करने जाएगा तो सर खोल दूँगा। मैं लौट पड़ा।

सरपञ्च—तुमने कहा था छन्दी ?

छन्दी—जरूर कहा था। थाने में इत्तला होती तो गांव की बदनामी होती। दूसरे गांवों के लोग कहते कि इस गाँव में चोरी होती है ! सिर्फ़ इसीलिये रोक दिया। सिर्फ इसी मतलब से !

गाँव के वे लोग जो पीछे खड़े थे - शाबाश छन्दी गुरू !

छन्दी—तुम लोग चुप रहो, मैं भुगतान कर लूँगा।

एक पञ्च—क्यों छन्दी ? किस पञ्च ने किसकी बकरी बांधी ? किसकी गाय ? और किसकी जमीन में कौन पञ्च घुस बैठा है ?

छन्दी—मेरे पास भी एक रजिस्टर रहता है। जब मैं किसी दिन गाँव का पंच हो जाऊँगा तब खोलूँगा उसको और अभी सुनना चाहते हो तो अभी सुनाने को भी तयार हूँ।

एक पञ्च—हाँ सुना दो।
दूसरा—हम इसके मरे बाप को भी नहीं डरते।
तीसरा—पुलिस के हवाले करो इसको।
} (एक साथ)

छन्दी—पुलिस के हवाले करने में पंचायत की शान में बट्टा लग जावेगा। मैं निर्दोष हूं। यहीं अपने मन की कर लो। कसर रह जाय तो पुलिस के हवाले कर देना। मैं भुगतने को तैयार हूं।

कुछ गाँव वाले—इन गुण्डों को हटाओ, ये आंखें दिखलाते हैं।

मुखिया—(*उन लोगों के प्रति*) यदि तुम लोग किसी ऊधम के लिए उतारू होकर आये हो तो वैसा कहो, हमारे पास काफी इलाज हैं। गांव नपुन्सक नहीं हो गया है। बोटी बोटी का पता नहीं लगेगा।

गांव के बहुत से लोग—ये सब के सब चोर हैं।

छन्दी—(*अपने साथियों से*) मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं, चुप रहो, धीरज के साथ सब देखते जाओ।

सरपञ्च—हम सबूत पीछे लेंगे, पहले तुम्हारा बयान लेंगे छन्दी।

छन्दी—कितनी बार बयान लोगे दादा ?

सरपञ्च—असल में अब मतलब की बातों का आरम्भ होता है। सुनो, तुमने चोरी न की सही, पर तुमको मालूम तो है कि किसने की ?

छन्दी—मुझको मालूम है ।

एक पञ्च—जब इनको मालूम है तो इन्हीं ने ही की या करवाई होगी ।

सरपञ्च—(*पंचसे*) ठहरो भैया, (*छन्दी से*) बतलाओ किसने की है ?

छन्दी—दो भैंसें देने का वायदा करने वाले गिरोह ने ।

मुखिया—कैसी भैंसें ।

सरपञ्च—छन्दिया को कहते जाने दो, वह अपने कीचड़ में साने बिना किसी को नहीं छोड़ेगा ।

छन्दी—भैंसों वाली बात भेद की है । सौगन्ध हो चुकी है । मैं नहीं बतलाऊंगा, सरपंच चाहें बतला दें ।

सरपञ्च—खैर ! बतलाओ वह कंजड़ कहां है जो चोरियों का पता देने तुम्हारे पास आया है ?

छन्दी—(*इधर उधर देखकर*) देखता हूं ।

एक पञ्च—क्या देखते हो ? बतलाओ कहां है ?

छन्दी—भाग गया ! भाग गया !!

सरपञ्च—कब ?

छन्दी—जब तुमने मेरी प्रतीति नहीं की और किवाड़ बन्द करके भीतर घुस गए !

सबके सब पञ्च—यही चोर है ।

सरपञ्च—क्या बात बनाई पट्ठे तुमने ! भाई गांव वालो, छन्दी के ऊपर अपराध सिद्ध होता है । इन्होंने कहा था कि एक कञ्जड़ मेरे घर पर बैठा है, जो चोरियों का ब्यौरा बतलायगा । तुम लोग क्या कहते हो ?

छन्दी—एक बात मेरी भी सुन लो भाइयो । इन्होंने मन में निश्चय कर रक्खा है कि मैं ही अपराधी हूँ । मैं कञ्जड़ों को इनके सामने पेश

करना चाहता था, पर इन्होंने मेरी एक न सुनी, वह कञ्जड़ इनको दो भैंसें भी देना चाहता था। ये बोले—पहले भैंसें लाओ। कौल करार हो गया। गङ्गाजली उठ गई। इन्होंने क़ौल पहले तोड़ा, इसलिए मुझको भी कोई आन नहीं रही है। मैं निर्दोष हूं। यह दूसरी बात है कि (*बेसुरा गाकर*) पाँसा पड़े सो दाँव, और पञ्च करें सो न्याव।

छन्दी के साथी—वाह गुरू, वाह !

गाँव वाले—निकालो इनको। हम भी लाठी चलाना जानते हैं।

छन्दी—धीरज धरो भाइयो। चुप रहो।

धाँधू—बिना गवाही साखी सबूत के न्याय हो गया ! यह तो विचित्र सा है सब—मैंने अपनी उमर भर में ऐसी पंचायत नहीं देखी !

एक पञ्च—तुमने सिवाय जुआ वगैरह खेलने के उमर भर में देखा ही क्या है ? तुम क्या किसी से कम हो ?

सबल—हूं, हूँ। हमारे दादा ने क्या किया है ?

एक पञ्च—चुप छोकरे !

छन्दी—हां भाई, सब चुप रहो। इनको मनमानी करने दो। पंचायत है काहे के लिए ? पुराने बैर चुकाने के ही लिए न ? निकालो कसरें, निकालो पुराने कांटे, और करो अपने कलेजे ठण्डे।

सरपञ्च—यह बिलकुल ग़लत है। जान बूझकर मक्खी कोई नहीं खाता। पंचायत में बैठकर कोई अन्याय नहीं करता।

धाँधू—हैं कहां गवाही साखी ? कहां है छन्दी के खिलाफ़ सबूत ?

सबल—हां किसके सामने छन्दी काका ने फ़सल काटी ? देखा किसी ने ?

सरपञ्च—कोई न देख पावे तो पाप ही नहीं हुआ ? · छन्दिया ने गांव के छोकरों तक को बिगाड़ डाला है। पंचो, गांव वालो, सब को

विश्वास है कि यह चोर है। पक्का चोर, परन्तु इसमें भी कोई शक नहीं कि आंखों देखा कोई प्रमाण नहीं है। ऐसी हालत में क्या किया जाय यह सवाल है। प्राचीन काल में जैसा कि सुनते आए हैं एक उपाय किया जाता था। आजकल उसका करना बहुत मुश्किल है। यदि सब लोग राजी हो जाओ तो वह उपाय काम में लाया जाय।

बहुत से गांव के लोग—बतलाओ दादा, बतलाओ।

सरपञ्च—पुराने युग में अपराधी को नीम के पत्ते चबवाए जाते थे। यदि उसको कड़वे लगते तो अपराध साबित समझा जाता था।

एक पञ्च—छन्दी तो पूरा नीम का पेड़ चबाकर निगल जायगा!

सरपञ्च—एक परीक्षा होती थी हाथ पर अँगारे रखने की, दूसरी चूल्हे में हाथ डालने की, तीसरी कड़ाही में जलते हुए तेलमें हाथ डालने की। यदि छन्दी में हिम्मत है और वह चोर नहीं है तो इन परीक्षाओं में होकर निकल जावेगा। यदि वह इनकार करे तो मैं अपने कागज़ों में उसके दोषी होने का निर्णय लिख दूँगा। क्यों भाई पंचो!

एक पञ्च—बिलकुल ठीक!

सरपञ्च—कहो भाई गांव वालो?

अधिकांश गांव वाले—बिलकुल ठीक!

छन्दी—यह मेरे लिए बिना किए का दण्ड रहा प्रत्येक दशा में, पर खैर। यहां तो मुखिया और पंचा के आबुर्दे और कृपापात्र जमा हैं न। एक ने कहा कान का कउआ ले गया तो वैसाही सबने कह दिया। कोई भकुआ यह देखने वाला नहीं कि सिर के किसी भाग में कान जहां के तहां चिपके हैं या नहीं। पर मैं इन परीक्षाओं के लिए तैयार हूं। मगाओ अँगारे, आग, कड़ाही, तेल इत्यादि।

एक पञ्च—मगाओ जल्दी ।
दूसरा—लइयो रे कोई ।
तीसरा – कढ़ाई रमुआंके यहां से ले आओ ।
चौथा—तेल बिरजुआ के यहां से । (एक साथ)

(कुछ लोग गांव की ओर दौड़ जाते हैं)

धाँधू —हे राम ! यह सब क्या हो रहा है ? क्या संसार से धरम-करम सब उठ गया ?

छन्दी—घबराते क्यों हो धाँधू दादा ? साँच को आँच क्या ? मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा ।

धांधू—मुझको बहुत डर लग रहा है । हे राम ! हे राम !!

सबल—मुझको काँटे कसक रहे हैं और घुटने की चोट दर्द कर रही है ।

धाँधू—चुप चुप । कोई बात नहीं ।

छन्दी – (*बेसुरा गाकर*) 'जो तुझको काँटा बुबे, ताहि बोय तू फूल, तुझे फूल के फूल हैं, उसको हैं तिरसूल ।'

एक पञ्च—अभी थोड़ी देर में सब सनीमा निकला पड़ता है ।

छन्दी—यह सब सनीमा के सिवाय और है क्या ? इस गांव में तुम लोगों का राज्य है चाहे जो कुछ करो, पर मेरा भी कोई है ।

(कुछ लोग आग, चूल्हा, कढ़ाई, तेल इत्यादि ले आते हैं । चूल्हे में आग जलाई जाता है । और तेल डालकर कढ़ाई को चूल्हे पर चढ़ा दिया जाता है । धाँधू और सबल--हेराम, हेराम, करते हैं । छन्दी के साथियों को क्रोध आता है, वे आगे बढ़ते हैं ।)

एक साथी—यह क्या करते हो गुरू ? इतने नासमझ हो गए ! हम सब मर मिटेंगे !!

छन्दी—इसतरह की बहादुरी नासमझ ही कर सकते हैं। तुम लोग दूर रहो। मैं यह सब राजी खुशी से कर रहा हूँ। यदि कहीं से पुलिस रोकने के लिए आ जाय तो उससे भले ही लड़ पड़ो, पर इन गांव वालों से और पंचों से कुछ मत कहना।

सरपञ्च—छन्दी, आगी तैयार है। अगर सच्चे हो तो रख लो हाथ पर।

छन्दी—मुझको जो झूठा कहे वह झूठा। पर पंचो ! मैं एक बात पूछता हूँ, मान लो मैं चोर सही तो क्या ककड़ी के चोर को गला कतरने का दण्ड दिया जाता है ?

एक पञ्च—चोर चोर सब एकसे, चाहे ककड़ी का चोर हो, चाहे हीरे-पन्नों का हो।

छन्दी—धन्य है पंचो, लाओ आगी मैं रखता हूँ अपने हाथ पर।

(एक आदमी चूल्हे में से कुछ अंगारे खपरैल के एक टुकड़े पर लाता है। चबूतरे के पास पड़े हुए खपरे के एक टुकड़े को छन्दी झटपट उठा लेता है और आग लाने वाले के हाथ को झटका देकर अंगारे अपनी गदेली पर रक्खे हुए खपरे पर रख लेता है।)

छन्दी—देखो भाइयो, मैं अपराधी नहीं हूं।

सरपञ्च—यह क्या मसखरापन कर रहे हो ?

छन्दी—तुम लोग यहां जमा ही काहे के लिए हो ?

एक पञ्च—यह कोई परीक्षा है ? बिल्कुल दिल्लगी !

छन्दी—तो पंचों ने यह कब कहा था कि हाथ की खाल पर अङ्गारे रख लेना। हथेली पर खपरा और खपरे पर अङ्गारे। अङ्गारे हाथ पर रक्खे हैं हो गई परीक्षा।

गाँव के अधिकांश लोग—यह कुछ नहीं।

एक—बड़ा चालाक है यह !
दूसरा—पूरा धूर्त !
तीसरा—कञ्जड़ों का सिरताज !
(एक साथ)

सरपञ्च—ठहरो ! ठहरो, अभी दो परीक्षाएँ तो और बाकी हैं। बेटा, कितनी चालाकी करेंगे ? छन्दी, चूल्हे में हाथ डालो। हाथ जिसपर खाल है, खाल वाला हाथ, कोई आड़-ओट न हो। खबरदार।

छन्दी—मैं तुम लोगों का आबुर्दा या कृपापात्र होता तो कैसा ही पाप कर डालने पर क्या ऐसा ही सलूक मेरे साथ किया जाता ?

सरपञ्च—गांव में अभी क्या बाकी है यह तुमको परीक्षाओं के बाद मालूम पड़ेगा।

छन्दी—परीक्षाओं से बेदाग़ निकल जाने पर भी सताया जाऊँगा क्या ?

सरपञ्च—गाँव का यही तो लक्षण है कि जहां अपराधी परीक्षाओं से पार हुआ तहां आधे से अधिक गांव उसका पक्षपाती हो जाता है। पर अभी दो मार्कें और हैं। तुम चोर हो, उनसे पार न पा सकोगे।

छन्दी—मैं चोर नहीं हूँ, अभी इतना ही कहता हूँ। परीक्षाओं के खतम हो जाने पर कुछ और कहूँगा।

सरपञ्च—तो डालो चूल्हे में अपना नङ्गा हाथ।

छन्दी—अभी लो। मैंने किया ही क्या है !

(छन्दी जलते हुए चूल्हे में हाथ डालकर तुरन्त खींच लेता है।)

सरपञ्च—यह कुछ नहीं हुआ।

धाँधू—क्यों नहीं हुआ ? छन्दी ने चूल्हे में हाथ डाला, और बराबर डाला; जिनके आँखें हैं, उन्होंने देखा है। और अभी दिन है, रात नहीं है।

एक पञ्च—इसको चूल्हे में हाथ डालना कहेंगे ?

छन्दी—क्यों नहीं कहेंगे ? उठाओ गङ्गाजी और कहो कि मैंने चूल्हे में हाथ डाला या नहीं !!

मुखिया—चूल्हे में हाथ डाला तो ज़रूर।

सरपञ्च —परन्तु खींच तुरन्त लिया।

छन्दी—यह तुमने कब कहा था दादा, कि चूल्हे में हाथ डालकर उसे उसी में दिए भी रहना ? यही कहा था न कि आग में हाथ डाल दो ? मैंने डाल दिया, हो गई परीक्षा, बस !

एक पञ्च—अभी कैसे हो गई परीक्षा ? ऐसे सस्ते छूटना चाहते हो ? चाहे जिसकी चोरी करवा लो। चाहे जिसको आग्वें दिखला दो और भेड़िए की तरह मौज से घूमते रहो ! अब परीक्षा हो रही है। कड़ाही में तेल खलबला जाने दो फिर डालना नङ्गा हाथ उसमें; अबकी बार एक भी चालाकी न चलने पावेगी। धर लिया खपरा हाथ पर। रख लिए उसपर अङ्गारे ! कह दिया हो गई परीक्षा !! बन गए सच्चे !!! तुम डाल डाल तो हम पात पात। करो, कितना चालाकी करते हो।

छन्दी—गाव में जितने लाला, लल्ला, दादा, बड़े, काका और बाबा नामधारी होते हैं, सब एक से एक बढ़कर कतर-ब्योंत वाले होते हैं। उनसे कोई अफसर या कानून पार नहीं पाता। सब आठगांठ कुमेत। मैं भी पार नहीं पा सकूँगा। पर मेरी निर्दोषिता मेरी पीठ पर है। इसलिए परवाह नहीं।

मुखिया—तुम इतने बकवादी हो और मुँह जोर न होते तो इतने बुरे न होते। गांव किसी न किसी तरह सब कुछ सहता चला जाता है, पर बुरी जबान छोटे से छोटा नहीं ओढ़ पाता।

सरपंच—इनकी जबान क्या है बिजली की कैंची है। आव देखे न ताव, सरसराते चले जाते हैं।

एक गाँव वाला--कढ़ाही में तेल कड़कने लगा है, तैयार है।

बहुत से गाँव वाले--डालो, हाथ कढ़ाई में डालो !

छन्दी—दोनों या एक ?

कुछ गाँव वाले--दोनों हाथ, दोनों।
कुछ और गाँव वाले--एक ही सही। } (एक साथ)

धांधू—(*खड़े होकर*) कभी नहीं। जलते हुए तेल में इस गरीब का हाथ कभी नहीं डालने दूँगा।

कुछ गाँव वाले--तो तुम डाल दो अपना हाथ।

धाँधू—मेरा चाहे जो कुछ कर लो। छन्दी निर्दोष है।

छन्दी—चुप बुढ़ऊ ! चुप !!

धाँधू—मैं चुप नहीं रहने का। मैं बतलाऊंगा चोर कौन है। एक बेकसूर मारा जाय और मैं मुँह बन्द किए बैठा रहूँ ! हो नहीं सकता।

एक पञ्च—अजी नहीं, कैसे हो सकता है ? चोर-चोर मौसेरे भाई। जुआरी और चोर में अन्तर ही क्या ?

धाँधू—मुझको बतलाओ इस गांव में कौन जुआ नहीं खेलता ?

सरपंच—बैठ जा बूढ़े बैठ जा। न्याय होने दे।

छन्दी—हां हां, होने दो न्याय। बैठो बूढ़े, देखो तो न्याय। सांच को आंच नहीं आवेगी !

धाँधू—मैं तुमको तेल में हाथ नहीं डालने दूँगा।

(*बूढ़ा उससे लिपट जाना चाहता है, छन्दी उसको अलग कर देता है।*)

सरपंच—तो तुमने निश्चय कर लिया ? अब की बार का मोर्चा भयंकर है।

छन्दी—मेरी गांठ में निश्चय सदा रहता है। अपने अनिश्चय की तुम लोग जानो, बिना दोष के मुझको दोषी बना दिया। फिर दकियानूसी परीक्षाओं का सहारा लिया। एक परीक्षा ली, मैंने पार पा लिया ; दूसरी ली, मैं उसको भी लांघ गया; अब तीसरे पर आ कूदे ! क्या इसी को न्याय कहते हैं ? पंचायत यही है ? मन में किसी के विरुद्ध एक भावना पक्की कर ली और दिखलाने लगे न्याय का स्वांग।

छन्दी के साथी—वाह गुरू, वाह !

छन्दी—ठहरो, पचों की बेअदबी मत करो। इनको गुस्सा आजायेगा तो इन्साफ कर उठेंगे !

(छन्दी अथाई के पेड़ से कुछ पत्ते तोड़ता है)

सरपंच—यह क्या ? अब की बार एक भी चालाकी न चलेगी। नंगा हाथ कढ़ाई में डालना पड़ेगा, और नहीं तो तुम्हारे विरुद्ध फैसला लिखा जायगा और तुमको कुछ दिनों जेल की हवा खानी पड़ेगी।

छन्दी—जिस पेड़ के नीचे बैठकर तुम न्याय करते हो उसी पेड़ की कुछ पत्तियां मैंने न्याय का रास्ता साफ करने के लिए हाथ में ली है।

धाँधू—हां न्याय करिए साहब, न्याय। छन्दी अपराधी नहीं है, अपराधी—

छन्दी—ठहरो बुड्ढे ! न्याय का साधन यह रहा मेरे हाथ में। देखो इसकी करामात।

(छन्दी कड़ाही के कड़कड़ाते तेल में पत्तियों को डुबोता है और पञ्चों पर छिटकाता है।)

छन्दी—(दौड़ दौड़कर) लो भाई पञ्चो ! लो !! लो भाई पञ्चो ! लो !! (*पञ्च इधर उधर भागते हैं।*) अरे यह क्या ? भागते क्यों हो ? तुम सब तो हरिश्चन्द्र हो न ? दूध के धुले हुए ! धर्म के अवतार !! क्या इस तेल की बूंदें गरम लगीं ? क्यों भाइयो, तुम तो कोई चोर नहीं हो, फिर तुमको क्यों बूंदों ने जला दिया ? मेरा हाथ जल जाता तो मैं चोर

था, न जलता तो निर्दोष, तुम क्यों जलन के मारे भाग उठे ? अरे जाते कहां हो सुनो तो !!

छन्दी के साथी—वाह छन्दी गुरू, वाह !

सरपंच—(घबराकर दूर से) अरे भाई रहने दे ! रहने दे !!

मुखिया—बस, बस ! बहुत हुआ ।
एक पञ्च—हमें नहीं लेनी परीक्षा ।
दूसरा—सत्यानाश होजाय इस छन्दिया का । (एक साथ)
तीसरा—मार डाला बदमाश ने !
चौथा—करो जल्दी कुछ बन्दोबस्त इसका ।

गाँव के कुछ लोग—हि ! हि !! हि !!! हि !!!!

गाँव के और कुछ लोग—ह ! ह !! ह !!! ह !!!!

(लोग इधर उधर टुकड़ियों में बँट जाते हैं)

छन्दी—कहो भाई पञ्चो, होगई मेरी परीक्षा या नहीं ? आज कल के युग में भी इस तरह की राक्षसी परीक्षा ! सोचो भाई पञ्चो, इस संसार में दोषी कौन नहीं है ? गाँव या नगर क्या ऋषियों मुनियों की बस्तियाँ हैं ? और फिर मैंने किया क्या था ?

धाँधू—भाई पञ्चो, चोर मैं हूं । छन्दी लाल चोर नहीं है । मैं कहना चाहता था, पर मेरी कोई सुन ही नहीं रहा था; मुझे जो कुछ दंड देना हो देदो ।

सबल—दादा यह क्या कह रहे हो तुम ? क्यों अपने को और मुझको मिटाने को फिरते हो ?

(छन्दी पत्तियों को फेंक देता है । सरपंच, पंच, मुखिया इत्यादि चबूतरे के निकट आते हैं । अधिकांश गांव वाले प्रसन्न हैं । छन्दी धाँधू पर आँखें तरेरता है ।)

छन्दी—क्यों बे उल्लू ?

सरपंच—तो असल में चोर यह गुआरा धांधू है !

छन्दी—असल में चोर यह गांव भर है जो गरीबों को पेट पालने के साधन नहीं जुटाता।

एक पञ्च—तो धांधू का बयान लिखो। दण्ड के लिए काफी है।

छन्दी—और छन्दीलाल के खिलाफ जो पहले से ही लिख लाए थे, उसका क्या होगा ? इसको फाड़कर दूसरा रंगो और दूसरे को फाड़ कर तीसरा। कानून ने पंच बना दिया मानो कहीं का राज दे दिया है। भोले-भालों को फुसला बहका कर ,वोट ले लिए और बन गए पञ्च ! फिर लगे करने अन्धेर !! अरे धर्म को चीन्हो, न्याय को चीन्हो, असली कारण की जड़ में जाओ और मनुष्य को मनुष्य समझो।

मुखिया—रजिस्टर का पन्ना नहीं फाड़ा जा सकता है। उस पर छपी हुई गिनती पड़ी है।

छन्दी—तो अलग कागज पर लिख लो। मुझ से और अधिक नहीं सहा जाता है। बैठ गए पञ्चायत करने और गवाही साखी का ढोंग किया तो किया, नहीं तो निर्दोष अपराधी को दण्ड दे दिया ! किसी की पूड़ियां खालीं और किसी की मिठाइयाँ। मैं भूल गया। भेड़, बकरी, रुपया, पैसा, अनाज, मज़दूरी सब हजम ! इसी पर कहते हैं हमको धर्मावतार कहो। देखो हम जलाते हैं हाथ तेल में, इसके बाद मेरी पांचों उँगलियाँ होंगी घी में, और तुम लोगों का सिर होगा कड़ाही में !!

मुखिया—बहुत बक-बक सुन ली। करो अब काम।

कुछ गाँव वाले—बहुत देर हो रही है। } (एक साथ)
कुछ दूसरे—तेल जला जा रहा है। }

छन्दी—हूँ ! क्या न्याय हो रहा है !! मेरा हाथ मेरे बाप के दिए हुए हाथ, को खाक करने के लिए अब भी छटपटा रहे हैं ये कुछ भूत। न्याय से इनको क्या मतलब ? बिरजुआ का आधी छटाक तेल जला जा रहा है। उसके लिए जान दे रहे हैं। सुनते हैं, जब किसी को फांसी पर चढ़ा कर मारते हैं तब पहले उसे मनचाहा खाने को देते हैं। कम से कम अधमरा होने तो मैं जा ही रहा हूँ। मुझको भी मिलेगा कुछ भाई पंचो !

एक पंच—कढ़ाही का तेल ले जाना।

छन्दी—वह भी पराया, सो भी तुमसे बचे तब ?

सरपंच—आओ छन्दी बैठो। हम लोग मामले को बढ़ाना नहीं चाहते। अभी कुछ ऐसा नहीं लिखा गया है। हम काले अक्षर को झूठा नहीं लिखेंगे, निश्चय जानो। *(चौकीदार से)* तुम भी आज की बातों की इत्तला थाने में मत करना। समझना, जानो कुछ हुआ ही नहीं। पर इन गांव वालों के लिए क्या करें जिनकी चोरियां हुई हैं ?

एक गाँव वाला—धांधू काका ने चोरी क्यों की ?

धाँधू—भूखों मर रहा था और क्या करता ?

दूसरा गाँव वाला—मेरा तो थोड़ा ही कटा है खेत। मैं अपना दावा वापिस लेता हूँ।

एक पंच—तो फिर न्याय नहीं करना होगा क्या ? चोर यों ही मौज करते रहेंगे !

धाँधू—मौज कहां है ? भूखों तो मर रहा हूँ।

सबल—आज दिन भर से एक दाना भी मुँह में नहीं डाला।

एक पंच—छन्दी फसल तो खड़ी है। आज उसपर हाथ जमाओ।

छन्दी—काट लेगा तो कितना ले जायगा ? फिर अपनी फ़सल की कुशल न समझना, पञ्च भइया !

छन्दी के साथी—वाह छन्दी गुरू ! वाह !!

सरपंच—नहीं यह ठीक नहीं है। इस तरह तो खेत काटते काटते एक दूसरे के गले काटने की नौबत आ जायेगी और हम सब चौपट हो जायँगे। सब लोग मिहनत मजदूरी करें। परस्पर ईमान बर्तें। धांधू को माफ कर देना चाहिए।

धाँधू—मैं जुआ नहीं खेलूंगा, पंचों के सामने प्रण करता हूँ।

छन्दी—मैं आगे क्या करूंगा, यह कुछ सोचकर ही कहा जा सकेगा परन्तु रात का खेल अकेले धांधू का न था, यह सही है।

सरपंच—ऐं ! खैर !! । इति ।